फरीदाबाद

मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 137 नवम्बर 1999

* Reflections on Marx's Critique of Political Economy
* a ballad against work
* Self Activity of Wage-Workers: Towards a Critique of Representation & Delegation

The books are free

माहौल ऐसा ही है इसलिये (3)

दुखड़ों के गट्ठर लादे हम अक्सर उहापोह की स्थिति में होते हैं :

– कहते भी न बने

– बिन कहे रहा भी न जाये।

हम जानते हैं कि अपनी परेशानियाँ कम करने के लिये ही नहीं बल्कि परेशानियों को बहुत ज्यादा बढाने देने से रोकने के लिये भी प्रेशर बनाने की जरूरत होती है, लगातार दबाव बनाये रखना आवश्यक है। एक कदम है अपनी बातें कहना....

डरावने भूत

अपनी बातें कहने का प्रचलित अर्थ है शिकायतें करना और वह भी सरकारी महकमों को अथवा अन्य जानी-मानी संस्थाओं को।

नाम लिखना होता है इसलिये शक्तिशाली की शिकायत करने में डर लगता है। आमतौर पर मैनेजमेन्टों की शिकायतें मजदूर नहीं करते क्योंकि :

– मैनेजमेन्ट को नाम का पता चलेगा ही। नौकरी से निकाल देगी अथवा अन्य चोट मारेगी।

–लीडरों को पता चलेगा ही। वे कहीं फँसा देंगे अथवा अपने पट्ठों से पिटवा देंगे।

यह इसीलिये है कि आमतौर पर संघर्ष के नाम पर लीडर अथवा वैकल्पिक नेता लोग ही जब-तब शिकायतें करते हैं। मजदूर जब भाषणबाजी और धौंस-धपट्टी से काबू में नहीं आते तब भरमा कर जाल में फाँसने के लिये अदालत में केस करने व अन्य शिकायतें करने जैसी बातें होती हैं।

आशा-निराशा के ज्वार-भाटे

शिकायत करने को लीडर लोग ऐसे पेश करते हैं कि इससे समस्या हल हो ही जायेगी। जानते हुये अनजान बन कर इस जज-उस अफसर-फलाँ मन्त्री को महिमामंडित किया जाता है। साक्षात चमत्कार की फसलें लहराई जाती हैं। आशा.....

झेलने को तैयार करने के वास्ते संग-संग मजदूरों पर अन्य पेंच कसे जाते हैं। जैसे ही हालात माफिक लगते हैं, लीडर लोग ही पलटा खा कर : " शिकायत करने से होता ही क्या है ? सब बिके हुय हैं " की फिकरेबाजी पर उतरआते हैं।

अत्यधिक बढा-चढाकर प्रचारित-प्रसारित करने पर आशा, निराशा, चमत्कार व डर का प्रभावशाली बनना व्यक्ति के गौण होने की अभिव्यक्ति मात्र है। माहौल निजी की बजाय संस्थाओं का है। संस्थाओं के रूबरू व्यक्ति का अधिकाधिक गौण होते जाना ही वर्तमान है।

आशा-निराशा-डर के संगम के पार

नौकरी से निकाल दिये जाने पर कोई मजदूर जगह-जगह शिकायत करती-करता है तो इससे मैनेजमेन्ट पर कुछ दबाव पड़ता ही है। एक स्थान पर कार्यरत कई मजदूर शिकायतें करते हैं तो इससे कुछ दबाव पड़ता ही है। इस प्रकार की शिकायतों में चिन्हित होने से खतरे वाली बातें भी कम ही होती हैं।

सरकारी महकमों और अन्य जानी-मानी संस्थाओं को शिकायतें करना दबावों में एक दबाव मात्र है, इससे अधिक कुछ नहीं और इसके दायरे से बाहर अपनी गतिविधियों के महत्व को समझने की आवश्यकता है। वैसे भी, अपनी बातें कहने का प्रचलित अर्थ संस्थाओं को शिकायतें करना करार दे कर वर्तमान ने इसे काफी हद तक लीडरों की झोली की चीज बना दिया है।

डाल-डाल पात-पात पर कूकना

अभी ही, तत्काल, फौरन, अरजेन्ट प्रभाव-असर वाले तौर-तरीकों द्वारा कम्पनियों-संस्थाओं से निपटने के प्रयास आमतौर पर सकारात्मक की बजाय नकारात्मक नतीजे ही लिये होते हैं।

और फिर, मजदूरों के पास तो घरों, गली-मोहल्लों, चाय-पान की दुकानों, सड़कों, डिपार्टमेन्टों-फैक्ट्रियों में हर रोज अपनी बातें कहने के अनगिनत मौके होते हैं। इन अनन्त अवसरों का उपयोग कर हम अपनी बातें कह कर, फैला कर मैनेजमेन्टों पर लगातार दबाव बनाये रख सकते हैं।

अपनी छवि को चार चाँद लगाने के लिये लाखों-करोड़ों खर्च करती मैनेजमेन्टों के भण्डाफोड़ के लिये हमारे बच्चों के हाथ से लिखे, सार्वजनिक स्थानों पर चिपके पर्चों तक में भारी क्षमता है।

चिन्हित होने का कोई खतरा नहीं लिये इस प्रकार कही जाती हमारी बातों पर चमचे-कड़छे-लीडर कोई लगाम नहीं लगा सकते। हर मजदूर अपने-अपने ढँग से इस प्रकार रोजाना अपनी बातें आसानी से कह सकती है, कह सकता है।

चमचों-कड़छों को कम्पनी का महिमामण्डन करने के लिये टुकड़े दिये जाते हैं। लेकिन .... लेकिन कम्पनी की प्रतिष्ठा के साथ अपनी प्रतिष्ठा जोड़ कर आम मजदूर भी कई बार तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर कम्पनी की बड़ाई के चक्कर में घनचक्कर बनते हैं। हमें निचोड़ने में लगी कम्पनी की छवि बनाने में जुटना हमारे द्वारा स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना है। (जारी) ■

युवा मजदूर : " नया-नया लगा हूँ। फैक्ट्री में एक एक काम बताता है तो दूसरा दूसरा काम और तीसरा पानी पिलाने को ही कह देता है। ' काम पूरा नहीं किया ' की शिकायतें बड़े साहब के पास और प्रसाद में झाड़। जो वरकर पहले से लगे हैं वे भी रौब जमाते हैं। पिताजी एस्कोर्ट्स में काम करते हैं और उन्हें यह सब बताया तो वे उल्टे मुझे ही डॉटने लगे। अब कहें तो किससे ? पिताजी तो चलो जैसे-तैसे यह सब झेल कर परमानेन्ट हो गये थे पर अब तो किसी को परमानेन्ट भी नहीं करते। कैजुअल भी एक की सिफारिश से लगा हूँ। कब तक मन मार कर यह सह सकते हैं ?"

और, एक इंजिनियर : " मैंने सन् 89 में इंजिनियरिंग की पढाई खत्म की थी। तब से नौकरी में फँसा हूँ। दिन-भर एक कुर्सी पर कम्प्युटर के सामने बैठना पड़ता है। बेहद छोटा केबिन है – बाँई ओर की दीवार दो फुट दूरी पर, दाँई ओर ढाई फुट, पीछे एक फुट और सामने चार-साढे चार फुट जिसमें एक मेज व कुर्सी भी फँसा रखी हैं।

" सब की तरह मुझे भी मौसम के उतार-चढाव, धूप, हवा, पानी से बेहद लगाव है पर दफ्तर बेसमेन्ट में होने व एयरकन्डीशन होने

(बाकी पेज चार पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

शोषण के लिये कानून
और कानून से परे शोषण

सिराको (इ) लिमिटेड मजदूर : "हमारी समस्या यह है कि जो वेतन 7 तारीख को मिलना चाहिये वह हमें 27 तारीख को मिलता है।"

नूकेम वरकर : "आज 16 अक्टूबर हो गया है और मैनेजमेन्ट ने आर एण्ड डी तथा एन एम टी एल मजदूरों को अगस्त माह का वेतन भी नहीं दिया है। एल टी ए के पैसे भी नहीं दिये हैं और न एजुकेशन अलाउन्स ही दिया है। ऊपर से दुराचार के झूठे आरोप लगा कर मैनेजमेन्ट काम करते हुये वरकरों को सस्पेन्ड करती है।"

सुपर ऑयल सील मजदूर : "अगस्त की तनखा भी आज 11 अक्टूबर तक नहीं दी है। कोई वरकर कहता है कि मकान मालिक किराया माँगता है तो मैनेजमेन्ट कहती है कि मकान मालिक को पीट दो। पैसे माँगने पर मैनेजमेन्ट झूठे आरोप लगा कर वरकरों को निलम्बित भी कर रही है।"

झालानी टूल्स वरकर : "मैनेजमेन्ट जब भी तनखा देती है तब गुण्डागर्दी के लिये चन्दे की रसीद लिफाफे में डाल कर दस रुपये हर मजदूर के काट लेती है। बीच-बीच में बिना कोई रसीद-वसीद के ही मैनेजमेन्ट कभी 100 तो कभी 50 रुपये काटती रही है। एक बार फिर इस प्रकार 50 रुपये लेने की बात 12 अक्टूबर को भाषण में की गई। इस पर कुछ मजदूरों ने 14-15-18 अक्टूबर को डी.सी., एस.पी. और डी.एल.सी. को लिख कर इस गैर-कानूनी हरकत के दोहराये जाने की सूचना दी। नये साहबों ने इस बार ऐसे पैसे लेने पर रोक का आश्वासन दिया। वेतन में रुटीन भारी कटौती कर झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट ने अगस्त 99 का वेतन 30 अक्टूबर को देना आरम्भ किया। कम्पनी के कैशियरों ने हर मजदूर के वेतन में से 50 रुपये बिना किसी रसीद-वसीद के गुण्डागर्दी के लिये फिर काट लिये।"

सेवा इन्टरनेशनल मजदूर : "आज 14 अक्टूबर तक भी अगस्त माह का वेतन मैनेजमेन्ट ने हमें नहीं दिया है। तीन महीने ओवर टाइम काम के पैसे भी नहीं दिये हैं। इधर मैनेजमेन्ट हमें काम भी नहीं दे रही – रोज फैक्ट्री में 8 घन्टे खाली बैठा कर रख रही है।"

इन्जेक्टो वरकर : "सितम्बर की तनखा हमें आज 16 अक्टूबर तक नहीं दी है।"

फर आटो मजदूर : "मई से मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के जरिये 150 वरकर रखे हैं। इन वरकरों को ई. एस. आई. कार्ड नहीं दिये हैं और न सितम्बर का वेतन आज 11 अक्टूबर तक।"

ब्रॉन लैबोरेट्री वरकर : "13 अक्टूबर हो गया है और सितम्बर की तनखा हमें अभी तक नहीं दी है।"

इन्डस्ट्रीयल टूल्स मजदूर : "3-4 साल रख कर निकाल देते हैं। कोई रिकार्ड नहीं रखते, कापी पर हाजरी लगाते हैं। महीने की तनखा 900-1000 रुपये देते हैं।"

कॉमेट मजदूर : "हैल्परों को 1300 रुपये वेतन देते हैं। सादे वाउचरों पर हस्ताक्षर करवाते हैं। कुछ को ई.एस.आई. कार्ड भी नहीं देते।"

खेमका इस्पात वरकर : "तनखा 15-20 तारीख को जा कर देते हैं और ठेकेदारों के मजदूरों को तो महीने के 1400 रुपये ही देते हैं।"

मौर्या उद्योग मजदूर : "तनखा 1200 रुपये महीना ही देते हैं। फैक्ट्री में आये दिन वरकरों को चोट लगती रहती हैं। जिसे ज्यादा चोट लग जाती है उसे मैनेजमेन्ट यह कह कर घर भेज देती है कि चार दिन की छुट्टी कर लो और अपना इलाज करवाओ। छुट्टियों के और इलाज के पैसे नहीं देते।"

शर्मा मोटोविक वरकर : "ई. एस. आई. कार्ड नहीं देते और तनखा मात्र 1000-1200 रुपये देते हैं।"

इन्डो टैक्स वरकर : "ठेकेदारों के 250 मजदूरों को 1000-1600 रुपये महीना देते हैं। अगस्त का वेतन 30 सितम्बर को जा कर दिया। ई.एस.आई. कार्ड नहीं, फण्ड नहीं, गजेटेड छुट्टियाँ भी नहीं।"

राज टैक्सटाइल्स मजदूर : "तनखा 1400-1500 रुपये देते हैं। हाजरी कार्ड नहीं, ई. एस. आई. कार्ड नहीं, फण्ड नहीं।"

कम्पनियाँ किसी की नहीं होतीं

एस्कोर्ट्स मजदूर : "मैनेजमेन्ट द्वारा वी आर एस उर्फ सी आर एस की चर्चा पर सैकेन्ड प्लान्ट में टूल डिजाइन एण्ड प्रोसेस इंजिनियरिंग के 8-9 मैनेजरों ने कहा, 'हम सब इकट्ठे चले जायेंगे। इसके लिये ऐसा करो: गेट पर एक-एक फूलमाला, एक-एक अटैची और पाँच-पाँच लाख रुपये रख दो। हम खुद ही माला पहन लेंगे, अटैची में 5 लाख रख लेंगे और चले जायेंगे।' इन मैनेजरों में से किसी को भी मैनेजमेन्ट ने फिर नौकरी छोड़ने को नहीं कहा है।

"जिन्हें कहीं और देखने को बोल दिया है वे इस्तीफे नहीं दे रहे। अपमानित करने वाले ट्रान्सफर कर दिये जाने अथवा केबिन में खाली बैठा दिये जाने पर भी लोग नौकरी नहीं छोड़ रहे! 20-25-30 साल से कम्पनी के लिये मजदूरों से काम लेते साहब लोगों ने कम्पनी के हमले से अपने बचाव के लिये 'ढूँढ रहे हैं। कहीं जगह मिलते ही यह नौकरी छोड़ देंगे' – जैसी बातों को अपनी कारगर ढाल बनाया है।"

....और बातें यह भी...

कटलर हैमर वरकर : "ठेकेदारों के जरिये मजदूर रखने शुरू कर दिये हैं। कुछ माल बाहर बनवाने की चर्चा है। वी आर एस की तलवार चलायेंगे।"

रोलाटेनर्स मजदूर : "डी एल एफ वाले प्लान्ट को बन्द करने की बातें मैनेजमेन्ट कर रही है। कहती है कि इसे सूरजपुर ले जायेंगे और यहाँ काम कर रहे वरकरों को निकालेंगे।"

कैजुअल वरकर : "मैनेजमेन्ट **एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक** में तीन महीने बाद ई. एस. आई. कार्ड देती है जबकि तीन महीनों में तो अधिकतर कैजुअलों को निकाल ही देती है।"

(बाकी पेज चार पर)

और बातें यह भी

बाटा मजदूर : "25 फरवरी को की तालाबन्दी को मैनेजमेन्ट ने 25 अक्टूबर को समाप्त कर दिया है। हमें पिलपिला बनाने के मकसद से मैनेजमेन्ट ने आठ महीने हमारे पेट पर लात मारी है। मनमाफिक हमें काटने-छाँटने और बोझ लादने के लिये मैनेजमेन्ट ने यह किया है। कई नौकरियाँ खाने और हमारी हड्डियों तक को निचोड़ने की मैनेजमेन्ट की योजना है। 1983 की तरह शान्त मन से सोच-विचार कर, बिना किसी फू-फाँ के फैक्ट्री में कई मासूम से कदमों के सिलसिले के जरिये हम मैनेजमेन्ट की इस दुधारी स्कीम को भी फेल कर सकते हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "बोनस की अधिकतम सीमा 6000 रुपये है पर मैनेजमेन्ट 4800-5200 रुपये ही दे रही है जबकि 20 परसैन्ट में 14-15 हजार रुपये बनते हैं और इनमें से 40-50 दिन के काट भी लो तो भी 12-13 हजार तो बनते ही हैं। और, जहाँ 8.33 बोनस व 11.67 एक्स-ग्रेशिया कह कर 20 परसैन्ट दे रहे हैं वहाँ तो राशि को कोई नियम-कानून नहीं बाँधते लेकिन वहाँ भी रुपये 5 हजार ही दिये हैं। दस प्रतिशत को बीस प्रतिशत क्यों कह रहे हैं?"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार ही छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें।

अनुभव की बातें

हिन्दुस्तान लैदर मजदूर : "आधे से ज्यादा कैजुअल हैं – 4-5 साल से काम कर रहे वरकर भी कैजुअल हैं। एक यूनियन नेता के पास गये तो उन्होंने कहा कि यूनियन बना लो, जिनके पास पुराना रिकार्ड है उन्हें परमानेन्ट करवा देंगे। हमने यूनियन बनाई और लीडरों ने फूँ-फाँ की। मैनेजमेन्ट ने 10 वरकर बाहर कर दिये हैं। लगता है कि यूनियन बनाने से कोई फायदा तो होने से रहा, कुछ की नौकरियाँ ऊपर से चली गई हैं।"

सी.एम.आई. वरकर : "एग्रीमेन्ट में 6 महीने लगातार बढा हुआ प्रोडक्शन देने पर इनसेन्टिव की बात थी। पहले 6 महीने बाद 3000 रुपये दिये। दूसरे 6 महीने बाद रंगीन टी.वी. की बात थी पर मैनेजमेन्ट ने यह कह कर टाल दिया कि 6 महीने और कर लो, इनसेन्टिव इकट्ठा दे देंगे। हमने यह भी कर दिया पर फिर भी मैनेजमेन्ट ने कुछ नहीं दिया है। उल्टे, वर्क लोड बढाने के बदले वेतन में जो पैसे बढाने थे वह भी मैनेजमेन्ट ने नहीं दिये हैं तथा बारी-बारी से इनक्रीमेन्ट वाली बात भी लागू नहीं की है।"

आटो लेक मजदूर : "प्रोडक्शन बढवाने के लिये मैनेजमेन्ट ने स्वयं बहुत जोर लगाया पर किसी प्लान्ट में वरकर तैयार नहीं हुये। लिसिनेवल में तो कमेटी बना कर मैनेजमेन्ट ने वर्क लोड लादने की कोशिशें की पर सफल नहीं हुई। इसके बाद मैनेजमेन्ट ने एक यूनियन का झण्डा टँगवाया और 50 परसैन्ट वर्क लोड बढाने वाली एग्रीमेन्ट की घोषणा कर दी। प्रोडक्शन पूरी करनी है तो ड्युटी के बाद भी आधा-एक घन्टा फोकट में खटो। भड़क कर 9 मजदूरों ने नासमझी से लिसिनेवल में इस्तीफे दे दिये – मैनेजमेन्ट चटपट उनकी नौकरियाँ खा गई।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "एग्रीमेन्ट से पहले दो मजदूर जितना काम करते थे उससे दुगना अब एक को करना पड़ रहा है। हालत खराब हो जाती है। बिना नौकरी गुजारा होता तो कभी का यह नौकरी छोड़ देता। अभी 30 साल का भी नहीं हुआ हूँ।"

कटलर हैमर मजदूर : "हम ने हड़ताल, स्लो डाउन व प्यार से मैनेजमेन्ट से बात करके देख लिया। कोई समस्या हल नहीं हुई। सरकार में कहीं कोई सुनवाई नहीं है। पच्चीस साल से यूनियन लीडरों को देख रहा हूँ। हमारा काम उनको सीट पर बैठाना रहा है और उनका काम सीट पर बैठते ही हमें बेचना। पिछली एग्रीमेन्ट के 345 रुपये मैनेजमेन्ट ने अभी तक नहीं दिये हैं और इधर 10 प्रतिशत उत्पादन बढा कर देने के बावजूद भी कुछ नहीं मिला। समस्याओं का इस प्रकार तो हल मुश्किल है। आपस में सोच-विचार कर नये रास्ते निकालना जरूरी बन गया है।"

शातिरपना

इन्जेक्टो मजदूर : "40 परमानेन्ट वरकरों को निकालने के लिये मैनेजमेन्ट ने यह तरीका अपनाया : जो कल का आया हैल्पर हो उसे मशीन पर आपरेटर लगा देते और पुराने आपरेटरों को हैल्परों की जगह लगा देते। अब ठेकेदारों के वरकरों को 1000-1200 तथा कैजुअलों को 1300 रुपये वेतन देते हैं।"

टेकमसेह वरकर : "कैजुअलों और परमानेन्टों को अलग-अलग शिफ्टों में करके मजदूरों को आपस में भिड़ाने की मैनेजमेन्ट ने स्कीम रची है। कैजुअलों को परमानेन्ट करने का झूठा लालच दे कर ज्यादा प्रोडक्शन करने को कहती है। कैजुअलों के उत्पादन को बढा-चढा कर बता कर मैनेजमेन्ट परमानेन्टों से कहती है कि तुम जान-बूझ कर कम प्रोडक्शन देते हो। मजदूरों के बीच शक-शंका-टकराव को बढाने के लिये बीच-बीच में मैनेजमेन्ट आरोप लगाती रहती है कि परमानेन्ट वरकर कैजुअलों को कम काम करने को कहते हैं की शिकायतें आ रही हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "जे सी बी में 300 वरकर ही हैं। लेकिन 'कैन्टीन छोटी है' का बहाना कर मैनेजमेन्ट ने लन्च ब्रेक डिपार्टवाइज कर रखे हैं ताकि अलग-अलग डिपार्टमेन्टों के मजदूर आपस में कम मिल पायें, कम बातचीत कर पायें।

"हमारा व्यवहार बदलने के लिये दिल्ली से आते ज्ञानी आजकल फस्ट प्लान्ट में वरकरों की क्लासें बहुत ले रहे हैं।"

झालानी टूल्स वरकर : "मैनेजमेन्ट ने अपने खिलाफ हाई कोर्ट में फर्जी केस करवाया। कैन्सल की जा चुकी एग्रीमेन्ट को कैन्सल करवाने के लिये यह केस किया गया। सरासर झूठ फैलाया गया कि केस मजदूरों की 21 महीनों की बकाया तनखा के लिये है। हाई कोर्ट की आड़ में कोई और घोटाला करके भाषणबाज अब कहते हैं कि दो साल ऐसे ही चलेगा।"

हेरा-फेरी दर हेरा-फेरी

फौजी आटो मजदूर : "ओवर टाइम काम जम कर करवाते हैं लेकिन जब निकालते हैं तब जो पैसे बनते हैं उनमें से 300-400 रुपये यह कह कर काट लेते हैं कि ओवर टाइम में पूरा प्रोडक्शन नहीं दिया। कैजुअलों का फण्ड नहीं है, ई.एस.आई. काटते हैं पर जमा नहीं करवाते।"

कमला सिनटैक्स वरकर : "दो साल से बन्द पड़ी फैक्ट्री में 8-9 अक्टूबर को मैनेजमेन्ट ने नोटिस टाँगा कि 8 मशीनों पर 37 लाख रुपये का कर्ज है और डी.सी. ने इनकी नीलामी 27 अक्टूबर को करने की अनुमति दे दी है। जबकि जिन मशीनों के नाम नोटिस में लिखे हैं उनमें एक-एक मशीन ही 50-50 लाख की है।"

कैनन इंडिया मजदूर : "जिन वरकरों को यहाँ ट्रान्सफर किया उनका पिछला फण्ड अभी तक नहीं मिला है। फैक्ट्री यहाँ 94 से चल रही है पर कागजों में 96 से दिखा रहे हैं। लगभग 200 वरकरों से 1902 पर हस्ताक्षर करवा कर 1000-1200-1400-1700 रुपये देते हैं।"

साधु फोरजिंग वरकर : "नाम ट्रान्सफर का पर वास्तव में नई सर्विस पर लगाया इसलिये ई.एस.आई. की मेडिकल छुट्टियों के पैसे मजदूरों को नहीं मिलते।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "एग्रीमेन्ट 105 से बढा कर 140 ट्रैक्टर प्रतिदिन की है पर सी.एच.डी. में मैनेजमेन्ट कहती है कि हम ट्रैक्टरों की संख्या नहीं जानते, उत्पादन आई.ई. नोर्म्स के हिसाब से दो। आई.ई. नोर्म्स के नाम पर अन्ट-शन्ट प्रोडक्शन माँगते हैं। किसी को 2, किसी को 3, किसी को 4 मशीनें चलाने को कहते हैं। पैसे काटने की धमकियाँ तो देते ही हैं, मैनेजर लोग बात-बात पर तुरन्त परसनल वालों को बुला लेते हैं और गाली-वाली के झूठे आरोप लगा कर सीधे सस्पेन्ड करने की धमकियाँ देते हैं। आई.ई. नोर्म्स में दिये प्रोसीजर के अनुसार वरकर काम करते हैं तो मैनेजर कहते हैं कि बीच की टूलिंग छोड़ दो! क्वालिटी, मशीन, टूल और मजदूर की ऐसी-तैसी होने दो, बस गिनती बढाओ !!"

हिन्दुस्तान सीरिंज मजदूर : "11-12 अक्टूबर रात को बिजली का झटका लगने से 25 सैक्टर वाले प्लान्ट में एक वरकर की मौत हो गई। दूसरे दिन शाम को कम्पनी ने नोटिस लगाया कि मरने वाले की याद में दो मिनट का मौन रखा जायेगा। फैक्ट्री में मजदूर के मरने पर भी फैक्ट्री चलती रही।"

कर्निता टैक्सटाइल्स वरकर : "काम करते समय उबलते पानी की होदी में एक मजदूर गिर गया। उस लड़के की जलने से मृत्यु हो गई। आज 8 अक्टूबर तक मैनेजमेन्ट ने उसके परिवारवालों को कोई पैसे नहीं दिये हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "3 अक्टूबर को रेलगाड़ी से कट कर मरे सैकेन्ड प्लान्ट के श्री रामस्वरूप की मृत्यु आत्महत्या-हत्या-एक्सीडेन्ट की रहस्यमय गुत्थी है। 30 साल करीब सर्विस वाले जे एम 4 व असेम्बली के मेन स्टोर इन्चार्ज को जानने वाले वरकर उन्हें बियरिंग चोर मानने को कतई तैयार नहीं हैं। अधिक सम्भव है कि वी आर एस के तहत इस्तीफे के लिये दबाव की वजह से उन्होंने आत्महत्या की हो। ऊपर टॉप पर हुये किसी घोटाले पर लीपा-पोती भी श्री रामस्वरूप की मृत्यु का कारण हो सकती है। एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने मृत्यु पर शोक का नोटिस तक नहीं लगाया।"

वाह !

एस्कोर्ट्स मजदूर : "यामाहा के राजदूत प्लान्ट की मशीन शॉप के सिलेन्डर ब्लॉक में 11-12 वरकरों पर 150 पीस का उत्पादन था। एक मजदूर एक मशीन चलाता था। एग्रीमेन्ट ने प्रति वरकर **दो मशीन** चलाना तथा 8 मजदूरों द्वारा 220 पीस प्रति शिफ्ट तय कर दिया।

"हर पीस 8-9 किलो वजन का होता है और एक पीस को कम से कम तीन बार उठाना पड़ता है। मैटेरियल कास्ट आयरन का है – वर्किंग के दौरान चिप्स व गर्द बहुत उड़ती है। सिलेन्डर ब्लॉक वरकरों के हर साँस के साथ कण फेफड़ों में जाते हैं।

"एग्रीमेन्ट का नोटिस लगते ही दबाव दे कर मैनेजमेन्ट हर मजदूर से दो-दो मशीनें चलवाने लगी। दो-दो मशीनें चलाते सिलेन्डर ब्लॉक वरकरों ने प्रोडक्शन 50 पीस पर ला दिया और पूरी जोर-जबरदस्ती के बावजूद 5 महीने में 80-100 पीस तक पहुँचे।

"मैनेजमेन्ट ने धमकी पर धमकी दी। अन्तिम चेतावनी वाले कई नोटिस लगाये। और..... लाइन जाम होने से बचने के लिये मैनेजमेन्ट को सिलेन्डर ब्लॉक में कैजुअल वरकर लगा कर थर्ड शिफ्ट शुरू करनी पड़ी।

"मजदूरों ने आपस में तालमेल रखा। किसी को आगे नहीं किया। कोई वरकर बड़बोला नहीं बना। मैनेजमेन्ट किसी मजदूर को सस्पेन्ड नहीं कर पाई।

"पाँच महीने उसके साम-दाम-दण्ड-भेद को सिलेन्डर ब्लॉक मजदूरों ने फेल कर दिया तब मैनेजमेन्ट 8 वरकरों पर 150 पीस तथा 11 वरकरों पर 205 पीस पर आई। मजदूरों द्वारा 12-13 अक्टूबर को यह उत्पादन दिये जाने पर 15 अक्टूबर को एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट ने सिलेन्डर ब्लॉक के हर मजदूर को 16 हजार रुपये मई से 'एग्रीमेन्ट एरियर' के तौर पर दिये।"

दुलत्तियाँ

पीठ हुई है दोहरी, करते करते काम।
काम चोर के नाम से, फिर भी हैं बदनाम।।
मीटिंग में लीडर रहैं, अपनी सूखै जान।
कल से कैसे करेंगे, वे हमको जजमान।।
बादामों का भी डिनर, करते अफसर लोग।
हमको इक रोटी नहीं, उनको छप्पन भोग।।
सुन कर एग्रीमेंट को, रुकती अपनी साँस।
लीडर फिर से चल गई, तेरे छल की फाँस।।
अब तक तो वेतन नहीं, अट्ठाइस है डेट।
जबरन ओवर टैम है, और सिंगल है रेट।।
लीडर जी को मिल चुकी, मोटी थैली वाह।
मिले-मिले या ना मिले, अब हम को तनखाह।।
ऊँची दर ऊँची हुई, मँहगाई की लाट।
उस पर क्यूँ सरकार ने, डी.ए. दीनो काट।।
फिर से उँगली कटी है, कोहनी तक खरोंच।
अफसर बुड़-बुड़ कर रहा, जैसे देगा दौंच।।

– जसवन्त

और, एक इंजिनियर.... (पेज एक का शेष)

के कारण किसी एकरस तहखाने में फँसे होने जैसे हालात हैं।

"मेरा काम बेहद बकवास व नीरस ही नहीं बल्कि हानिकारक भी है। काम की गति बढाने के उद्देश्य से बनाये जाते उपकरणों को बनाने की प्रक्रिया में मेरे द्वारा किया जाता काम एक कडी मात्र है।

"घन्टों मेज-कुर्सी पर बैठे कम्प्युटर चलाने के कारण पीठ में स्पोन्डिलाइट्स हो गई है। रीढ की हड्डी में आये इस विकार के कारण पीठ, कन्धे तथा बाँह में दर्द है और थोड़ा-सा भी वजन उठाने से तकलीफ होती है। साँस की दिक्कत ऊपर से! अभी मेरी आयु 32 वर्ष की ही है।"

डाट दिये-रोक दिये

मितासो मजदूर : "नेगेटिव डी.ए. आया है कह कर मैनेजमेन्ट सितम्बर के वेतन में से 150 रुपये काटने लगी। कटी हुई तनखा लेने से हम ने मना कर दिया। आखिर में मैनेजमेन्ट को बिना पैसे काटे तनखा देनी पड़ी। सीधे से नहीं मानती और पैसे काट लेती तो हमारे पास हजार पेंच हैं – पचास के लिये मैनेजमेन्ट को पचास हजार की चपत लगाते।"

जे. एम. ए. इन्डस्ट्रीज वरकर : "डी.ए. कम आने की कह कर मैनेजमेन्ट वेतन में से 50 रुपये काट रही थी पर हम सब मजदूरों ने मैनेजमेन्ट को यह पैसे नहीं काटने दिये।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "सूरजपुर प्लान्ट में वरकरों ने एग्रीमेन्ट ठुकरा दी। मजदूरों ने एग्रीमेन्ट अनुसार प्रोडक्शन नहीं बढाया। कई महीने झख मार कर एस्कोर्ट्स यामाहा मैनेजमेन्ट ने अब पे-स्लिप में चढा कर सूरजपुर प्लान्ट के मजदूरों को भी एग्रीमेन्ट में बढाये पैसे देने शुरू कर दिये हैं।

"एग्रीमेन्ट द्वारा बढाये वर्क लोड के खिलाफ सैकेन्ड प्लान्ट में क्रैन्केज असेम्बली में वरकर थोड़े-से अड़े तो मैनेजमेन्ट ने एक वरकर दे कर सन्तुष्ट कर दिया जबकि चाहियें 3 थे। लेफ्ट व राइट लाइन जहाँ जुड़ती हैं वहाँ पर मजदूर वर्क लोड बढाने के खिलाफ दो महीने अड़े। इस पर मैनेजमेन्ट को उत्पादन 260 की बजाय 230 पीस मानना पड़ा, डबल मशीन की बजाय सिंगल मशीन के लिये राजी होना पड़ा और वरकर भी एक्स्ट्रा देना पड़ा।"

डाक पता :
मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

विकल्पों के लिये प्रश्न (6)

रात रात न रही

तमसो मा ज्योतिर्गमय मन्त्र है। बचपन से ही ज्ञान की वन्दना सिखाई गई।

ज्ञान को आलोक, रोशनी के तौर पर पेश किया गया। ज्ञानियों के महिमागान गवाये गये। श्रेष्ठता अर्जित करने के लिये ज्ञान में अव्वल रहने को आवश्यक बताया गया।

ज्ञानी बनने के वास्ते अनुशासन के बन्धन-जँजीरें-कौड़े अनिवार्यता बने! संग-संग आई तृष्णा व हवस दूसरों को पछाड़ने की। होड़-प्रतियोगिता नीयत में रच-बस गई।

शीघ्र ही दीख गया कि नौकरियों के लिये ज्ञान में माहिर होना एक मजबूरी है। और, अच्छी-बढिया-प्रतिष्ठित नौकरियों पर नजर डाली तो पाया कि ज्ञानियों के काम हैं :

- युद्ध के लिये अस्त्रों-शस्त्रों व रणनीतियों-कार्यनीतियों पर अनुसन्धान;
- ऊँच-नीच को बनाये रखने के वास्ते मनुष्यों को नियन्त्रण-कन्ट्रोल में रखने के तरीकों पर रिसर्च;
- काम की रफ्तार और मात्रा बढाने के लिये अध्ययन-मनन;
- ऐसे कल-पुर्जो-यन्त्रों का आविष्कार कि मनुष्यों को अधिकाधिक काम में जोता जा सके और पृथ्वी का अधिकाधिक दोहन किया जा सके;
- बढते काम के बोझ के दुष्प्रभावों द्वारा काम बाधित न हो इसके लिये दवाइयों की खोज;
- और, वर्तमान को बनाये रखने के लिये ऐसे ही अन्य मानवद्रोही-प्रकृतिद्रोही कार्य।

ज्ञान के इन प्रमुख उपयोगों को देखते हुये ज्ञान के प्रति आसक्ति कैसी? मोह कैसा? हमारे द्वारा अर्जित व उत्पन्न किया जाता ज्ञान हमारी ही जिन्दगी को बदतर बनाता है।

अगर हम ऐसी जिन्दगी चाहते हैं जिसमें रात सोने को हो, मिनटों-सैकेन्डों का हिसाब न दौड़ाये, एक-दूसरे को नीचा दिखाने का माहौल न हो तो ज्ञान, कैसा ज्ञान, कितना ज्ञान के प्रश्नों पर विचार-विमर्श आवश्यक है। (जारी)

....और बातें यह भी...

झालानी टूल्स वरकर : "फस्ट प्लान्ट की टूल रूम और ग्राइन्डिंग के मजदूरों ने आपस में काफी माथा-पच्ची की। एक सरगना जब प्लान्ट में आया तो 10-12 मजदूर उसके पास गये और तनखा फिर दो महीनों की बकाया हो जाने की कही तो वह बोला कि तनखा की बात छोड़ कर और जो बात करनी हैं वो करो।"

रफ्तार जानलेवा है

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।